अंत: क्रिया विश्लेषण का अर्थ एवं परिभाषा

* प्राय: शिक्षक द्वारा कक्षा - कक्ष में छात्रों के बीच किए जाने वाले शैक्षणिक कार्य व्यवहार को अंत: क्रिया कहा जाता है। कक्षा - कक्ष में शिक्षक का शैक्षणिक कार्य व्यवहार (शाब्दिक एवं अशाब्दिक दो रूपों में होता है। किन्तु इसमें से जब शिक्षा के शाब्दिक कार्य व्यवहार या अंत: क्रिया को विधिवत निरीक्षण करके उसे अंक प्रदान करके एक क्रम बद्ध एवं सुव्यवस्थित ब्यौरा तैयार किया जाता है तो उसे शैक्षणिक व्यवहार का विश्लेषण अथवा अंत: क्रिया विश्लेषण कहते हैं।

* यह एक वैज्ञानिक (क्रमबद्ध) विधि है जिसमें कक्षा में घटित क्रमबद्ध घटनाओं का अध्ययन होता है। इस विधि की सहायता से कक्षा गत सभी क्रियाओं एवं व्यवहारों का निरीक्षण करके अंकन किया जाता है।

* अंत: क्रिया विश्लेषण पद्धति के उद्देश्य

1. कक्षा - कक्ष में शिक्षक के शैक्षणिक कार्य व्यवहार एवं अंत: क्रिया को जानना, समझना एवं उसे संबंधी अभिलेख तैयार करना।

- शिक्षक की शैक्षणिक कार्य व्यवहार एवं अंत: क्रिया का शिक्षार्थियों के ऊपर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी प्राप्त करना तथा आकड़े एकत्रित करना।

शिक्षक के शैक्षणिक कार्य व्यवहार को सुधार युक्त बनाने के लिए उनकी त्रुटियों को दूर करने हेतु व्यवहारिक परामर्श देना।

शिक्षार्थियों की समस्याओं के समाधान हेतु निदानात्मक शिक्षण देने हेतु शिक्षकों को अभिप्रेरित करना।

फ्लैण्डर्स मन्त्र/क्रिया विश्लेषण विधि का स्वरूप

* फ्लैण्डर्स विधि में कक्षा-कक्ष में शिक्षक और विद्यार्थी के मध्य होने वाले अंत: क्रियात्मक व्यवहार को मूल रूप से तीन वर्गों में सर्वप्रथम विभाजित किया जाता है।

शिक्षक कथन		विद्यार्थी कथन	मौन/विश्रान्ति
अप्रत्यक्ष कथन	प्रत्यक्ष कथन		
1. स्वीकृति 2. प्रोत्साहित करना 3. विचारों की स्वीकृति 4- प्रश्न पूछना	5. भाषण देना 6. निर्देश देना 7. आलोचना करना	8. शिक्षक को उत्तर देना (छात्र अनुक्रिया) 9- छात्रों द्वारा पहल करना (स्वोपक्रम	10. कक्षा की व्यवस्था और शांति गतिविधि

1. स्वीकृति - Accepting. - अध्यापक बालकों की अनुभूति एवं भावना को समझता है और उसे स्वीकार करता है। छात्रों को अपने भाव व्यक्त करने की स्वतन्त्रता देता है। अध्यापक इस तरह की स्वीकृति के भाव व्यक्त करता है। जैसे उसने छात्रों की बातों को मान लिया हो नकारात्मक भावनाओं को छात्र स्वीकार नहीं करे।

2. प्रशंसा अथवा प्रोत्साहन - Praise & Encourage - छात्रों के सही उत्तर देने पर अध्यापक कुछ शब्दों (जैसे - अच्छा, शाबाश, उत्तम, तुम सही कह रहे हो) द्वारा छात्रों का प्रोत्साहन करता है यह सब प्रशंसा है

प्रोत्साहन में अध्यापक छात्रों की बात पूरी करने पर आगे कहने में मदद करता है जैसे, हाँ/हाँ ठीक है, आगे बताओ।

प्रारम्भिक कथन – Initiatory Talk –
छात्रों द्वारा शंकाएँ उठाना या अपने विचार व्यक्त करना इस वर्ग में अंकित होगा।

मौन अथवा भ्रम – Silence or confusion –
जब कक्षा में मौन हो, जब न कोई प्रश्न पूछा जाये, न उत्तर दिया जाता हो, ऐसे लगे जैसे कुछ समझ में नहीं आता तो इसी वर्ग में ऐसी स्थितियों को अंकित किया जाता है

साक्षरता, कक्षा-कक्ष में मौखिक एवं लिखित भाषा का प्रयोग – Literacy, oral and Written Language used in class-Room –

साक्षरता - Literacy

साक्षरता निरक्षरता का विलोम शब्द है साक्षरता से आशय अक्षर ज्ञान से होता है साक्षरता के अन्तर्गत लिखना, पढ़ना तथा गणना करना आता है जो व्यक्ति सामान्य रूप से अक्षरों का ज्ञान रखता है, अपने हस्ताक्षर कर लेता है तथा लिखना भी जानता है और थोड़ा बहुत गणित के ज्ञान के आधार पर हिसाब-किताब रख लेता है वह साक्षर कहलाता है।

मौखिक भाषा का कक्षा-कक्ष में प्रयोग
Use of oral Language in class-Room
मौखिक भाषा को उच्चारित भाषा भी कहा जाता है भाषा के उच्चारित रूप का व्यवहार हम अपनी बोलचाल की भाषा में प्रतिदिन करते है।

कक्षा-कक्ष में अन्तःक्रिया करते समय, प्रश्नों के उत्तर देते समय तथा शिक्षक को अपनी बात बतलाते समय एवं अ.प. छात्रों के साथ सम्प्रेषण करते समय मौखिक भाषा का प्रयोग किया जाता है। मौखिक भाषा हमारी बातचीत की भाषा होती है इसलिए भाषा से पूर्व बच्चा मौखिक भाषा सीखता है। मौखिक रूप में भाषा क्षणिक या अल्पायी होती है। कक्षा-कक्ष में हम जो कुछ भी बोलते हैं वह बोलने के साथ-2 हवा में उड़ जाता है। उसे यदि हम पकड़ना चाहें तो भी नहीं पकड़ सकते हैं। आज विज्ञान का युग है। विज्ञान में प्रतिदिन नये-2 आविष्कार हो रहे हैं। विज्ञान ने भाषा के उच्चरित अथवा मौखिक रूप को कुछ स्थायी बना दिया है जैसे- नभवाणी Radio तथा दूरदर्शन Television के द्वारा हम दूर बैठे हुए भी किसी बात को सुन सकते हैं। ग्रामोफोन Gramophone तथा ध्वनि लेख Tape Recorder के द्वारा हम उच्चरित या मौखिक भाषा को बहुत समय तक सुरक्षित रख सकते हैं परन्तु मौखिक भाषा को अल्पायी भाषा के रूप में ही देखा जाता है।

डासन - Dason — "मौखिक अभिव्यक्ति भाषा की नींव तैयार कर देती है।"

कक्षा-कक्ष में मौखिक भाव प्रकाशन के समय ध्यान रखने योग्य बातें - Points to be Remembered while Making oral Expressions in class. Room

कक्षा-कक्ष में मौखिक भाव प्रकाशन के समय शिक्षक को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1. उच्चारण के अभ्यास के लिए अथवा त्रुटियों को ठीक करने के लिए रेकार्ड यन्त्रों को लाया जाए।
2. यदि कोई बालक प्राकृतिक कारणों से शुद्ध उच्चारण नहीं कर पाता हो उसका कारण डॉक्टरों द्वारा खोजकर उसके संरक्षकों को सूचित कर चिकित्सा कराई जाए।
3. शिक्षक बोलने का आदर्श दृष्टान्त उपस्थित करें जिसमें शैली, क्रोध तथा शीघ्रता न हो।
4. किसी भी प्रकार का संकोच बच्चों में न आने पाए।
5. बालक किसी भी प्रकार अपने को कक्षा के अन्य छात्रों से हीन न समझे। इसके लिए उसे प्रोत्साहित करते रहना चाहिए।
6. बोलने में कठिनाई अनुभव करने वाले छात्रों को अधिक से अधिक बोलने और पढ़ने का अवसर मिलना चाहिए जिससे उनमें धीरे-धीरे साहस और स्वावलम्बन का विकास होने लगे।
7. बोलते समय सस्वरता तथा भावानुसार वाणी के उतार चढ़ाव पर भी ध्यान देना चाहिए।
8. भाषा में सरलता, मधुरता और लालित्य हो।

* मौखिक भाव-प्रकाशन के अन्य साधन

Different Means of Oral Emotional Publication

मौखिक भाव प्रकाशन में कुशलता प्राप्त करने में निम्नलिखित साधन सहायक होते है।

1. कहानी कथन — कहानी सुनना तथा सुनाना बालकों की अपनी प्रिय वस्तु है। इससे उनमें जिज्ञासा, अवधान और रुचि का विकास होता है अतः

इसके द्वारा भाषण में स्वाभाविकता और प्रवाह उत्पन्न किया जा सकता है। इसमें मनोरंजकता के साथ उनकी कल्पना-शक्ति को भी सजग किया जा सकता है।

2. सत्संग – सत्संग का हमारे भाव-प्रकाशन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। साधारणतः बालक जैसे वातावरण में रहेगा, उसका उसी प्रकार का वार्तालाप या भाव प्रकाशन होगा। सुन्दर, योग्य तथा शिष्ट बालक स्वरूप तथा शिष्ट वातावरण में ही पाये जाते हैं।

3. संवाद-पाठ – संवाद-पाठों से सम्भाषण की शिक्षा का अभ्यास भली प्रकार कराया जा सकता है। विभिन्न अवसरों पर योग्य भाषा का अभ्यास कराने के लिए अध्यापक को संवाद-पाठ कराते रहना चाहिए। इससे बालक देश-काल तथा पात्र के अनुसार वार्तालाप करने की महत्ता समझते हैं और उनके अभ्यस्त हो जाते हैं।

4. वाद-विवाद – वाद-विवाद बालक के मानस द्वार खोलने की कुंजी है। इससे अध्ययन-मनन तथा चिन्तन का अभ्यास होता है। तर्क की भावना को प्रोत्साहन मिलता है। अपने विचारों को सुसंगठित एवं सुव्यवस्थित रूप में रखने का बालक अभ्यास करने लगता है।

5. चित्र-माला – चित्रों को दिखाकर उसके विषय में बालक के भावों को सचेत कर मौखिक भाव-अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करना चाहिए।

लिखित भाषा का कक्षा-कक्ष में प्रयोग

Use of written Language in class-Room

कक्षा-कक्ष में लिखित भाषा का भी प्रयोग किया जाता है। लिखित भाषा को हम तब व्यवहार में लाते हैं, जब हमें अपना सन्देश किसी ऐसे व्यक्ति को पहुँचाना हो जो हमसे दूर हो। परम्परागत तथा वर्तमान विचारों को आगे आने वाली पीढ़ी के लिए सुरक्षित रखने के लिए भी लिखित भाषा का प्रयोग किया जाता है।